Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

अभिमन्यु अनत के शब्द-भंग उपन्यास में अभिव्यक्त राजनैतिक भ्रष्टाचार

विजय श्री मीना[1]

वर्तमान समय में न केवल भारत अपितु विश्व के अधिकांश देश भ्रष्टाचार जैसी विकराल समस्या से ग्रसित है। आज एक नग्न वास्तविकता के रूप में भ्रष्टाचार का खतरा हमारे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक जीवन में व्यापक रूप से घर कर गया है। आज यह भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था के नैतिक अस्तित्व पर अपना शासन जमाकर बैठ–सा गया है। यह एक ऐसी समस्या है, जिसे हमने न चाहते हुये भी शासन–प्रणाली का और जन–जीवन का एक अनिवार्य अंग मान लिया है। अब हालात ये हैं कि लोग इसे समस्या मानते ही नहीं, रिश्वत लेना–देना अब नौकरशाही के अनेक नियमों में से एक नियम हो गया है।

हाल ही में कई घोटाले चर्चा का कारण बनें। राष्ट्रमण्डल खेल घोटाला, स्पेक्ट्रम घोटाला, आर्दश सोसायटी घोटाला, सुकना भूमि घोटाला इत्यादि। भ्रष्टाचार किस प्रकार देश को घुन की तरह खाये जा रहा है इसका सबसे बड़ा उदाहरण तो हमारे विधायक और सांसद है। दूसरी ओर सरकारी कर्मचारी हैं जो बिना घूस लिये कोई काम ही नहीं करते। एक गरीब आदमी अपना राशनकार्ड भी बनवाने जाता है तो इन बाबुओं को रिश्वत देनी ही पड़ती है और वह गरीब बेचारा यह बस करता इसलिए है कि यदि वह रिश्वत नहीं देगा तो उससे अधिक पैसा तो दफ्तर के चक्कर काटने में ही खर्च हो जायेंगे।

साधारण शब्दों में भ्रष्टाचार को 'रिश्वत का कार्य' कहा जा सकता है। इसे निजी लाभ के लिए सार्वजनिक शक्ति का इस प्रकार प्रयोग करना जिसमें कानून तोड़ना शामिल हो या जिससे समाज के मानदण्डों का विचलन हुआ हो। डी.एच.बेली ने भ्रष्टाचार को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''निजी लाभ के विचार के परिणामस्वरूप सत्ता का दुरूपयोग जो धन सम्बन्धित नहीं भी हो सकता है।''

इसी प्रकार जे. नाय का भी कहना है कि ''भ्रष्टाचार निजी लाभों के लिए सार्वजनिक पद का दुरूपयोग दर्शाता है।'' भ्रष्टाचार को इस प्रकार भी समझाया गया है: ''यह आर्थिक या प्रतिष्ठा संबंधी लाभों की प्राप्ति के लिए सार्वजनिक भूमिका के प्रति औपचारिक कर्तव्यों से विचलन है।''

जैसा की शरद जोशी जी अपने व्यंग्य–लेखों के एक विशाल संग्रह में

[1] तदर्थ सहायक प्रोफेसर, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली

व्यंग्य करते हुए कहते हैं ''मंत्रिमण्डलों में बिराजते है भ्रष्टाचार के महाप्रभु सबके सिर पर स्नेह का अदृश्य हाथ फेरते हुए चिन्ता न करो भाई। हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे। कहाँ पर नहीं खिल रहे भ्रष्ट्राचार के फूल। जहाँ–जहाँ जाती है सरकार, उसके नियम, कानून, मंत्री अमला कारिन्दे साथ होते है। जहाँ–जहाँ जाती है सूरज की किरन, वहीं–वहीं पनपता है भ्रष्टाचार का पौधा। खूब बाँटनी है इसकी, बड़ी फैली ज्यॉग्राफी मोटा इतिहास, निरंतर निजी लाभ का अलजेब्रा, उज्ज्वल भविष्य भारतीय नेताओं, कर्मचारियों, अफसरों के हाथ में भाग्य रेखा के समानांतर, भ्रष्टाचार की नयी रेखा बन रही है आजकल।''

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग के प्रतिनिधि साहित्यकार है। मॉरिशम में इतने विपुल साहित्य की सृष्टि करने वाले अभिमन्यु अनत अकेले लेखक हैं। वे 'उपन्सास–सम्राट है तथा मॉरिशस के प्रेमचंद हैं। अनत में सामयिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ महाकाव्यात्मक प्रतिभा है जो अपने समाज की संस्कृति, अस्मिता अस्तित्व तथा स्वाधीनता के महत्त संघर्ष का जीवन्त चित्रण करती है तथा उपनिवेशवादियों के क्रूर, नृशंस तथा घातक अत्याचारों के बीच अपनी भारतीयता, भाषा और संस्कृति को जीवित रखती है। वे यथार्यवादी हैं, लेकिन जीवन मूल्यों के साथ। अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'शब्दभंग' में राजनैतिक भ्रष्टाचार की जड़े किस प्रकार फैली हुई है, इसका अत्यंत ही मार्मिक व यथार्थ धरातल पर चित्रण हुआ है। अनत जी इस उपन्यास में प्रशासन, कानून व्यवस्था, मानवीय जीवन मूल्य तथा व्यक्ति के स्वाभिमान को राजनैतिक भ्रष्टाचार के समक्ष घुटने टेकते हुए चित्रित करते हैं जो न केवल उस युगीन परिवेश अपितु वर्तमान शासन व्यवस्था से भी हमें रूबरू करवाता है। इस उपन्यास में जिस समस्या को प्रमुख स्वर दिया गया है, वह पाठकों को झकझोर देने वाला है।

अभिमन्यु अनत जी के 'शब्दभंग' उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक 'रोबिन' नामक पात्र के चारों तरफ घूमता नजर आता है। अनत जी ने 'शब्दभंग' में मॉरिशस में व्याप्त नैतिक मूल्यहीनता तथा राजनैतिक विसंगत्तियों का यथार्थ धरातल पर चित्रण किया है। इस उपन्यास में पदार्थों के व्यापारियों तथा उनके राजनीतिक मादक समर्थकों की ह्रदय–हीनता तथा देश– द्रोह का वर्णन किया गया है। मौत के सौदागारों के खिलाफ आवाज उठाने वाले नायक रोबिन (एक ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ पत्रकार) को बड़ी क्रूरता के साथ मार डाला जाता है। ताकि उसकी आवाज हमेशा के लिए बंद कर दी जाए और ड्रग आयोग के सामने नशीले पदार्थो के व्यापारियों की काली करतूतों को उद्घाटित न किया जा सके।

इस उपन्यास के नायक रोबिन को एक इंटरव्यू में बुलाया गया था जहाँ उसके साथ अन्याय तो हुआ ही , उसके आत्मसम्मान को भी ठेस लगी। वर्षो से स्थानीय रेडियो–टेलीविजन से जुड़े होने के बावजूद भी रोबिन को सहायक निदेशक पद के लिये योग्य नहीं समझा जाता है। उदाहरण के लिए ''उसके सभी मित्र इस बात को थोड़ा विचित्र ही मानते थे कि जब उसके पास अनुभव और अकादमिक योग्यता कॉर्पोरेशन में सबसे ज्यादा थी, तो भी

वह अपने से कम अनुभवी और कम योग्य से आदेश लेने की विवशता लिये हुए क्यों था?'' एक अन्य स्थान पर रोबिन का मित्र रहीम कहता है कि ''प्रोमोशन की हाईजैकिंग आजकल बुलंदी पर है।'' प्रस्तुत कथन वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक ज्वंलत दस्तावेज है।

वे जब भी रोबिन की चर्चा करते तो 'जीरेक्तर राते' संबोधन के साथ अर्थात कि वह निदेशक जो बनते–बनते रह गया। उसका कराण यह है कि शिक्षा–मंत्री के साढू भाई को उस ओहदे पर बिठाना है। रोबिन इस अन्याय का डटकर सामना करता है। वह एम.बी.सी.के निदेशक से संबंध में उलझ पड़ता है जिसके लिए उसे नौकरी से निलंबित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर हम रोबिन के उपर्युक्त वार्तालाप को देख सकते है– ''मैं आपका वक्त जाया नहीं कर रहा, आपको वक्त की याद दिला रहा हूँ। वक्त जिसका आपने हमेशा फायदा उठाया है। उस समय आपने कहा था कि अगर मैं आपके पक्ष में रहूँ तो आप जिस हस्ती के जरिए यहाँ आये थे, उससे मेरी सिफारश करेगें और आपके बाद सीधे मैं होऊँगा इस संस्था का कर्त्ता–धर्ता। याद है आपको?''

'शब्दभंग' में उपन्यासकर ने राजनीतिक दाँव–पेंचों, भाई–भतीजावाद आदि आधुनिक जीवन की विसंगतियों को भी रूपायित किया है। जोकि वर्तमान राजनीति का अकाट्य सत्य है। मानव जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र या पक्ष नहीं है, जो इस बुराई से अछूता हो। ''क्यों नहीं। आप तो पहले भी लोगों को बाहर करते आ रहे हैं। राजनीति के भेजे आप यहाँ आए थे। शायद यही वजह है कि आपने इस जगह को राजनीतिक कूड़ेदान बनाकर ही छोड़ा। उधर से जो भी खोटा माल भेजा गया, उसे आप यहाँ दाखिल करते गए और योग्य लोग बाहर छूटते गए। और जिस–जिसने आपके सामने दुमे हिलाते फिरते रहने से इनकार कर दिया, उसे आप बाहर हो जाने को विवश करते रहे। पर मैं उन लोगों में से नहीं हूँ।.....आप इसलिए मेरी बलि दे रहे है, क्योंकि उधर से किसी भाई–भतीजे को यहाँ बैठाने का आदेश आया होगा। आप ना कैसे कर सकते हैं।

उपंन्यासकार रोबीन की चारित्रिक दृढ़ता का उद्घाटन करता हुआ कहता है– वह किसी के आगे झुकता नहीं है। अपितु एक पत्रकार के रूप में कार्य करने लगता है। उसे हमेशा सक्रियता पसंद है, इसलिए 'लेमातें' समाचार पत्र के रिपोर्टर के रूप में ड्रग आयोग की कार्यवाही में दिलचस्पी लेता है। उसे लगा था कि देश के कुछ अत्यंत ही ताकतवर लोग देश तथा उसके युवा–वर्ग को नशीले पदार्थो के जहरीले बवंडर से निकलने नहीं देना चाह रहे थे। उसने मन ही मन सोचा था कि अगर कानून को इस तरह मुठ्ठी में लिया जा सकता है तो फिर देश का तो सत्यानाश हो जायेगा।

वह पत्रकारिता के माध्यम से मौत के सौदागरों का भण्डाफोड़ करना चाहता है। वह अपनी आँखों से देख आया था ब्राउन शुगर से मरते लोगों को। उनमें औरतें भी थी बच्चें भी। शहर से शुरू हुआ वह जहर गाँवों तक फैलने लगा था। कॉलिज के जिन छात्रों के साथ उसने बातचीत करके जो

गवाहियाँ पायी थी उन्हें वह अपने ही तक रखकर जी नहीं सकता था। वह उन सारे सबूतों को जनता के समक्ष रखना चाहता था। नशीले पदाथों के सौदागरों को न केवल सत्तारुढ मिनिस्टरों का संरक्षण प्राप्त है बल्कि वे धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं की आड़ में अपने काले धंधे चलाते हैं। साम्रिमूत्तू और उसके दो साथी गोपीचंद व मंसूर काले धन्धे में लगे थे। मंसूर जो माफिया का प्रमुख सदस्य है, इस बात की ओर संकेत करता है–''मैं अभी के लिए आप लोगों को केवल इतना ही बता रहा हूँ कि इस मुल्क में मेरे नाम और पैसों से एक यतीमखाना चलता है और एक मस्जिद– बस'' आगे मंसूर अपने काले धन्धे के तरीके के संबंध में रोबिन को बताता है – ''जिन मालों और असबाबों के लिए इतने हो– हल्ला होते रहे हैं उन्हें मैंने अब दो ऐसी जगहों पर छिपा रखा है, जहाँ अगर पुलिस पहुँचने की कोशिश करेगी तो मुल्क में बगावत हो जायेगी। इस देश का कोई भी, यहाँ तक सरकार भी यह हिम्मत नही कर सकती। किसी धार्मिक स्थान में गैर कानूनी चीज तक बाहर निकालने के लिए छापा मारने का हुक्म जारी नहीं किया जा सकता।''

उपरोक्त वर्णन से अनत जी ने सामाजिक विसंगत्तियों को उजागर कर दिया है। किस प्रकार स्वार्थी राजनेता व काले धन्धों में संलग्न लोग धर्म व ईश्वर को भी प्रयोग करने से नहीं हिचकिचाते हैं। मंसूर हर तरह से सुरक्षित है, यहाँ तक कि मिनिस्टर शिवा साम्रिमूतू उसके पक्षधर है क्योंकि मंसूर ही उसे चुनावों के लिए लाखों रूपये दे सकता है और उसकी भांजी की शादी के लिए बिरयानी की व्यवस्था कर सकता है।

रोबिन के दृढ़ संकल्प और साहस से प्रभावित होकर ईश्वर जो कभी मंत्री पद पर रह चुके है और जिसे ड्रग के मामले में फँसाया जा रहा है। उसे ऐसे कागजात देता है जिससे ड्रग के धन्धे करने वाले दरिदों का पर्दाफाश किया जा सके। मंसूर रोबिन से वे सारे कागजात खरीदने के लिए तैयार है और उसे एम.बी.सी. के उपनिदेशक पद पर प्रोमोशन दिलाने का भी प्रलोभन देता है। उसने ड्रग कमीशन, पुलिस, अदालत और उच्च स्तर पर सरकारी व राजनैतिक तंत्र के विरूद्ध इस काले धन्धे के अकाट्य प्रमाणों को एकत्रित कर लिया था, जिसके कारण सरकारी मशीनरी पूरी तरह हिल गई। रोबिन के अखबार के प्रधान संपादक भी उससे नाराज हो गये। पर ईमान और जमीर बेचकर समझौता करना रोबिन के स्वभाव में नहीं था। इस विचार से उसने 'लो सोलेई' के प्रधान संपादक रामजीत से मिलने का निश्चय किया। पर दुर्भाग्य से जब वह प्रधान संपादक रामजीत की गली में पहुँचा तो एक लारी उसकी कार से टकरा गई और एक गड्ढे में जा गिरी।

शाम को 'ले मातें' का सांध्य संस्करण निकला तो उसमे उप–प्रधानमंत्री का बड़ा फोटो और समाचार था और नीचे 'छपते–छपते' कॉलम में एक रहस्यमय दुर्घटना शीर्षक से खबर थी कि कार दुर्घटना मे एक पत्रकार की मृत्यु हो गई और पुलिस को एक खाली बैग प्राप्त हुआ।

इस प्रकार मादक द्रव्यों के व्यापारियों, मंत्रियों और सरकारी अधिकारियों के विरूद्ध उन अकाट्य प्रमाणों के छपने से पहले ही उस पत्रकार की हत्या कर दी जाती है–यही है शब्दभंग। जो हमें वर्तमान समय की राजनीति की

वास्तविकता से रूबरू करवाता है। आज भी समाज में न जाने कितने ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति इस प्रकार की घटना के शिकार आए दिन होते रहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. 'शब्दभंग– अभिमन्यु अनत प्रभात प्रकाशन, दिल्ली संस्करण – 1999
2. डॉ. कमल किशोर गोयनका (सं.), अभिमन्यु अनतः प्रतिनिधि रचनाएँ, नटराज प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1999
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका (सं.) मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ, 1999,
4. सामाजिक समस्याऐं– राम आहुआ, रावत पब्लिकेशन्स, द्वितीय संस्करण
5. हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे– शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, संस्करण–1999